राज कॉमिक्स

मूल्य 8.00 संख्या 771

अत्याचारी

एक आकर्षक स्टीकर मुफ्त

भौकाल

NAGRAJ DHRUVA

DOUBLE ACTION YEAR

1997

1693

भोकाल सीरीज

अत्याचारी

○ लेखक :- संजय गुप्ता.
○ चित्र :- कदम स्टूडियो.
○ सम्पादक :- मनीष गुप्ता.

कहावत है कि मान-सम्मान के बदले अगर स्वर्ग भी मिले तो उसे ठोकर मार देनी चाहिए, क्योंकि स्वर्ग की समस्त सुविधाओं से बढ़कर है सम्मान के साथ मिली कांटों की सेज--

इसीलिए अपनी पत्नी वेणु लड़ाकी और मुंहबोली बहन तूरीन के साथ राजमहल के ऐश्वर्य को ठोकर मारकर इस बियाबान जंगल में रहने आ पहुंचा था, सम्मोहन सम्राट शूतान--

भाग्य की विडम्बना को क्या कहिए जिसने हंसते-खेलते हमारे जीवन पर डाल दी दुख और विछोह की गहरी छाया। सदा एक-दूसरे के साथ रहने वालों को भाग्य ने कितना दूर कर दिया है आज...

"आज भी स्वप्न की तरह मेरी आंखों के सामने घूम जाते हैं वे पल जब अपने-अपने उद्देश्य को लेकर तिलिस्मी ओलम्पाक में पहुंचे हम सब एक-दूसरे से मिले और एक ऐसी शक्ति बन गये जिसके आगे ना तिलिस्मी ओलम्पाक टिक पाया"..

© RAJA POCKET BOOKS

... और ना उसका रचयिता शैतान फुचांग। तिलिस्म टूटने के बाद अतिक्रूर वापस अपने ग्रह लौट गया, लेकिन में परीलोक का राजकुमार भोकाल और ओसाक ग्रह की राजकुमारी तुरीन ऐसा ना कर सके, क्योंकि हमारे पैरों में बेड़ियां बनकर लिपट गया था विकासनगर राजपरिवार व प्रजा का प्यार!

"विकासनगर में सम्मान और स्नेह के साथ-साथ मुझे पत्नी के रूप में मिली वेणु वृंदावनिया व लड़की / मित्र और भाई के रूप में मिला महाबली भोकाल और बहन के रूप में मिली शरारती चुलबली तुरीन जो भोकाल को अपना दिल देकर उसकी पत्नी बन गई।"

"कितना प्रबल था तुरीन का भाग्य जो उसे महाबली भोकाल सा पति मिला था!"

"लेकिन विधाता तुरीन के साथ एक क्रूर खेल खेलने जा रहा था क्योंकि उसने उसके भाग्य में लिख दिया था एक ऐसा शब्द जो किसी भी पत्नी के लिए प्रलय से कम नहीं होता, और वह शब्द होता है सौतन"-

"जहां राजा विकासमोहन की भतीजी रूपसी षड्यंत्र रच कर और भोकाल के साथ साढ़े तीन फेरे लेकर भोकाल की पत्नी बनी थी"..

"... वहीं ऋषिकन्या सलोनी ने भोकाल की प्रतिमा के साथ फेरे लेकर उसे मन ही मन अपना पति माना था"-

"जहां रूपसी को समाज का समर्थन प्राप्त था, वहीं सलोनी भोकाल के लिए समाज छोड़ चुकी थी।"

"लेकिन तुरीन को अपने भोकाल पर अथाह विश्वास था। वह जानती थी कि भोकाल उसका... सिर्फ उसका है, इसी विश्वास के सहते तुरीन ने सलोनी और रूपसी को महल में रहने की अनुमति दे दी, ताकि नारी जाति का अपमान ना हो। लेकिन क्या जानती थी वह बेचारी कि ऐसा करके वह आश्रय के साथ-साथ भोकाल का प्यार भी बांट रही थी।"

महाबली हर रात्रि रूपसी और सलोनी से मिलने जाते हैं।

नहीं। यह नहीं हो सकता। भोकाल ऐसा नहीं कर सकते!

"कानों सुनी बातों को पूरी तरह झूठ माना था तुरीन ने, लेकिन आंखों देखे उस सत्य को वह कैसे झूठला सकती थी"।

"अपने सपनों के राजकुमार भोकाल के हृदय में किसी और का स्थान वह सहन ना कर सकी, विक्षिप्त सी हो गई वह सब कुछ देखकर"

"पर उसे क्या मालूम था कि कभी-कभी आंखों देखा भी 'झूठ' होता है। ऐसा ही झूठ था सलोनी और रूपसी के साथ भोकाल का मिलना भी, क्योंकि उन दिनों भोकाल माया के माया-जाल में फंसा हुआ था"—

"ये बात तुरीन ना समझ सकी, क्योंकि उसके अन्दर सुलग रही थी एक चिंगारी। जिसने उस समय भीषण आग का रूप धारण कर लिया जब उसे पता चला कि उसके साथ-साथ सलोनी और रूपसी भी भोकाल के बच्चे की मां बनने वाली हैं।"
"मुझसे देखी ना गई अपनी प्यारी बहन की वह दशा"–

"और मैं सारी बात साफ करने भोकाल से मिलने चल पड़ा"–
"किन्तु तकदीर शायद कुछ और ही चाहती थी।"

"राष्ट्र की रक्षा हेतु शत्रुओं से युद्ध लड़ने के लिए वह युद्धभूमि के लिए निकल चुका था।"
"मैं अपने क्रोध को दबाये वापस लौटा।"

"मगर तुरीन अपने क्रोध को दबाये ना रख सकी, वह उसे शान्त करने रूपसी और सलोनी के पास आ पहुंची"
तुम दोनों झूठी हो। तुम्हारे गर्भ में पलते बच्चे भोकाल के हरगिज नहीं हो सकते।
तुरीन!
"तुरीन के इसतामे ने रूपसी को भड़का डाला..."

... झपटकर उसने खींच ली तलवार, लेकिन कोई अनर्थ हो पाता उससे पहले ही रानी मोहिनी और में वहां आ पहुंचे !!
रुक जाओ! ये क्या करने जा रही हो तुम दोनों?
क्या हुआ है?

"सारी बात सुनकर रानी मोहिनी गम्भीरता से बोली"
सारा दोष तुम्हारा है तुरीन! बिना प्रमाण के तुम्हें इनसे ऐसे शब्द नहीं कहने चाहिए थे।...
मैं तुम्हें आदेश देती हूं कि...
बस महारानी, बस। क्रुद्ध मत कहिए, सलोनी के प्रति आपके समर्थन और आपके न्याय ने सिद्ध कर दिया है कि यहां मेरी बहन तुरीन का कोई सम्मान नहीं है....

...और जहां ऐसा हो वहां में एक पल भी नहीं रहना चाहता।
...आओ तुरीन!
शूतान!
रानी मोहिनी ने हमें बहुत रोकना चाहा।"

...लेकिन वहां रुकना अपने मान अपने सम्मान से खिलवाड़ करना था और में ऐसा कदापि नहीं होने देना चाहता था। इसलिए में तुरीन, वेणु और लड़की के साथ यहां आ गया।

यहां मुझे प्रतीक्षा थी उस दिन की जब तुरीन अपने बच्चे को जन्म दे और मैं उसे न्याय दिलाकर उसके होंठों की खोई मुस्कराहट को वापस लौटा सकूं।...

... आज आ गया है वह दिन। आज समाप्त होने जा रही है प्रतीक्षा की घड़ी क्योंकि तुरीन को प्रसव-पीड़ा आरम्भ हो गई है। अब वह किसी भी क्षण मां और मैं मामा...
... और पिता बन जायेगा मेरा परममित्र...

...भोकाल!
अरे!
एकाएक चौंक उठे शूलान को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ...

...क्योंकि उन आंखों को दिखाई दे रहा था...
भोकाल! इन जंगलों में।
जरूर वह हमें ढूंढता हुआ यहां पहुंचा है। वह ज्यादा ना भटके...

... इसलिए मुझे शीघ्र ही उसके पास पहुंचना होगा।

तुरीन के सामने भोकाल को एकदम ले जाकर में उसे अचंभित कर दूंगा।
खुशी से झूमते कुलांचे भरते शूलान को...

ज्यादा देर नहीं लगी वहां पहुंचने में--
अब बस एक हाथ दूर ही था भोकाल उससे-
किन्तु भोकाल को घूरकर अचंभित रह गया वह -
भोकाल!
ओह!
हिम का भोकाल।
धड्ड
अ... और मात्र भोकाल ही नहीं यहां की तो हर वस्तु हिम की बनी नजर आ रही है।
ओफ्फ! नहीं!
शैतान के ईर्द-गिर्द दूर तक रास्ते पर मौजूद घास और पत्थर हिम के नुकीले टुकड़ों में बदल चुके थे -
जिन्हें कम से कम कोई मनुष्य पार नहीं कर सकता था-

मुझे यहां बुलाकर फंसाया गया है। इसका सीधा सा अर्थ है कि शीघ्र ही किसी मुसीबत में फंसने वाली है...

... वेणु, लड़की और तुरीन।

गला प्यास से सूखा जा रहा है। भाभी! मुझे पानी चाहिए।

धीरज रखो तुरीन! मैं अभी तुम्हारे भैया को भेजकर पानी मंगवाती हूं।

बाहर पहुंची वेणु –

शैतान तो यहां कहीं नहीं दिख रहे... कहां चले गये?

वेणु ने आस-पास शैतान को खोजा, लेकिन जब वह नहीं मिला तो खुद ही पानी लेने के लिए पहुंच गई...

... तालाब पर--

प्रसव पीड़ा से छटपटाती तुरीन का प्यास के मारे बुरा हाल होगा इसलिए मुझे पानी लेकर शीघ्र ही वापस...

... लौटना!

...अरे! ये क्या?

... ये... ये तो सारा तालाब हिम की भांति जम गया है... और... और...

... मेरे दोनों हाथ भी इसमें बुरी तरह से फंस गये हैं।...
... मुझे अपने हाथ तुरन्त ही बाहर निकाल लेने चाहिए!
हाथ निकालने के लिए वेणु ने लगाई पूरी ताकत...

...लेकिन वह सफल ना हो पाई—
इसी के साथ वेणु समझ गई कि वह एक बड़ी मुसीबत में फंस गई है...

जबकि उसकी स्थिति से पूरी तरह अंजान थे तुरीन और लड़की--
कुछ देर से महसूस कर रही हूं कि कुटिया का वातावरण शनैः शनैः ठण्डा होता जा रहा है...
... ये तुरीन और उसके होने वाले बच्चे के लिए ठीक नहीं होगा इसलिए मुझे इस ठण्ड को दूर करने का प्रबन्ध करना चाहिए।

लड़की तुरन्त ही उठ खड़ी हुई--
मैं जलाने के लिए कुछ लकड़ियां लेकर आती हूं तुरीन!
जल्दी लौटना भाभी।
चिन्ता ना करो। मैं अभी गई और अभी आई।
फिर कुटिया से बाहर निकल गई लड़की-

जल्द ही जंगल में पास ही मौजूद उस सूखे पेड़ तक पहुंच गई--
ये पेड़ एकदम ठीक रहेगा।
फिर पेड़ को सूखा समझ कर लड़की ने कुल्हाड़ी चलाई...

... वह निकला--
हिम का पेड़!
लेकिन अब इस बात का पता चलने से क्या होता...

...अब तो बहुत देर हो चुकी थी--

लेकिन वृक्ष लड़ाकी पर विजय पाकर उसे अपनी कैद में ले चुका था...

...और इस बात ने किसी की आंखों की चमक को ज्यादा... और ज्यादा बढ़ा दिया--

मेरी योजना सफल रही मेरे रास्ते के तीनों कांटे हट चुके हैं....

... अब मुझे हासिल होकर ही रहेगी...

... तुरीन--

ठण्ड असहनीय हो गई है। शूलान भैया के साथ-साथ दोनों भाभियों का कुछ पता नहीं है। मुझे अपनी मदद स्वयं करनी होगी।

कपाला जरा मेरा प्रहार तो उठा ला।

म्याऊंऽऽऽ

तुरीन के आदेश पर अपने प्राणों की बाजी लगा देने वाली कपाला...

... भला उस छोटे से काम को करने में कितनी देर लगाती-

शाबाश कपाला!

उस प्रलयंकारी अस्त्र प्रहारा को सिर पर रखते ही तुरीन ने किसी स्वयं को ठण्ड से बचाने का इन्तजाम--
अब ठीक है।
प्रहारा की मदद से तुरीन ने स्वयं को तो ठण्ड से बचा लिया था--

लेकिन वह ना तो घास-फूंस की उस कुटिया को हिम कुटिया में बदलने से बचा सकी...

... और ना उसे टूटने से--
आह ह!
हिम के कई बड़े टुकड़े तुरीन को दबाने उसकी तरफ बढ़े--

मगर उस तक पहुंच नहीं पाये--
हिम हमारी प्रिय तुरीन के तन पर खरोंच भी डाल दे तो आत्महत्या...

... ता कर लें हम।
हिमराज!
सही पहचाना प्रिय तूने। परन्तु मात्र हिमराज नहीं मेरे प्रिय हिमराज बोल...
... ताकि मेरा वह परिश्रम सफल हो जाये...
... जो मैंने तुम्हें ढूंढने में किया है।
दुष्ट हिमराज! अपने प्राणों की खैर चाहता है तो लौट जा यहां से।
हा... हा... हा... तेरा कोई भी शुभचिंतक यहां नहीं पहुंचने वाला, क्योंकि उन्हें उलझाने का प्रबंध पहले ही करके मैं तुझे अपनी रानी बनाने आया हूं।
... और आज तो तू भी मेरा विरोध नहीं कर पायेगी क्योंकि इस हाल में तेरा हिलना-डुलना...
... तेरे और तेरे बच्चे के लिए ही हानिकारक होगा। हा... हा... हा...!
ठहाके लगाते हिमराज ने जैसे ही पूर्णिमा की तरफ कदम बढ़ाया...
... वैसे ही चीते की भांति उस पर टूट पड़ी कपाला--
ग्याऊऽऽऽ
आऊ!

मेरे इस शुभचिन्तक के बारे में क्या ख्याल है ?
अच्छा, लेकिन तेरा यह शुभचिन्तक...

... आज हिमराज को उसकी इच्छा पूरी करने से नहीं...
धड़ाक
म्याऊऽऽऽ

... रोक सकता !

अब बेटी ना रह सकी दुविधा—
तुझे रुकना ही नहीं मरना भी होगा दुष्ट !
धड़ाक

चपला की तेजी से सम्भला हिमराज—
तू उसे मारने की सोच रही है सुन्दरी ! जो मृत्यु को अपनी दासी बनाकर रखता है !
धड़ाम

माना कि तू शेरनी है लेकिन तू शायद ये भूल गई कि तू गर्भवती भी है और गर्भवती शेरनी को वश में करना उतना ही आसान है...
...जितना कि खरगोश पकड़ना।
अहह ह
सड़ाक
तुरीन के पेट पर वार करके दरिन्दगी की सारी सीमाएं पार कर दी थीं हिमराज ने--
तुरीन जल बिन मछली की भांति तड़पती नीचे गिरी--
अहह ह
चोट लगने की वजह से उसकी प्रसव पीड़ा और बढ़ गई--
और जैसे-जैसे वह पीड़ा बढ़ती जा रही थी वैसे-वैसे बढ़ रही थीं तुरीन के कंठ से निकलती चीखें...
...और हिमराज के हलक से निकला ठहाका--
अहहहSS
हा... हा... हा... अपने हर मनसूबे को पूरा करूंगा मैं...
...लेकिन ऐसा यहां नहीं हिम महल में होगा। हा... हा... हा...
अहहSSS
नहींSSS
दर्द से छटपटाती तुरीन को उठाकर ले चला वह शैतान जबकि तुरीन को बचाने वाले सभी बेबस थे। क्या कयामत...

... क्या वेणु--

धड़ाक

धाड़

धाम्

... क्या लड़की और...

... क्या शूतान--

मैं जितनी देर यहां रुकूंगा उतना ही उन तीनों पर संकट बढ़ता जायेगा इसलिए मुझे इस रास्ते को पार करना ही होगा, और ऐसा में अपनी मोहनिंद्रा के बल पर आसानी से कर सकता हूं।...

...जिसकी वजह से मुझे पीड़ा का तनिक भी आभास नहीं होता।

मोहनिंद्रा के बल पर मौत के उस रास्ते पर दौड़ पड़ा शूतान--

कहानी 19वें पृष्ठ से जारी

...ज्यादा दूर ना जा सका और लड़खाकर गिर गया--
ओफ्फ्! अत्याधिक लहू बह जाने से शरीर में आई कमजोरी ने मुझे मोह-निद्रा से जगा दिया...
गधरे... जख्मों से बहते लहू के आगे बेकार हैं मेरी मोहनिद्रा इसलिए...
...मैं इस रास्ते को पार नहीं कर सकता।
हताश हो चुके उस सम्मोहन सम्राट को नजर आया वह...
... गैण्डा--
वह गैण्डा मुझे यहां से निकालकर ले जायेगा।
शूतान के हाथों से निकले वे सम्मोहन गोले--
शाबाश आओ, मेरे पास आओ।
और उनमें फंसकर वह खूंखार गैण्डा सीधा-साधा गधा बन गया--

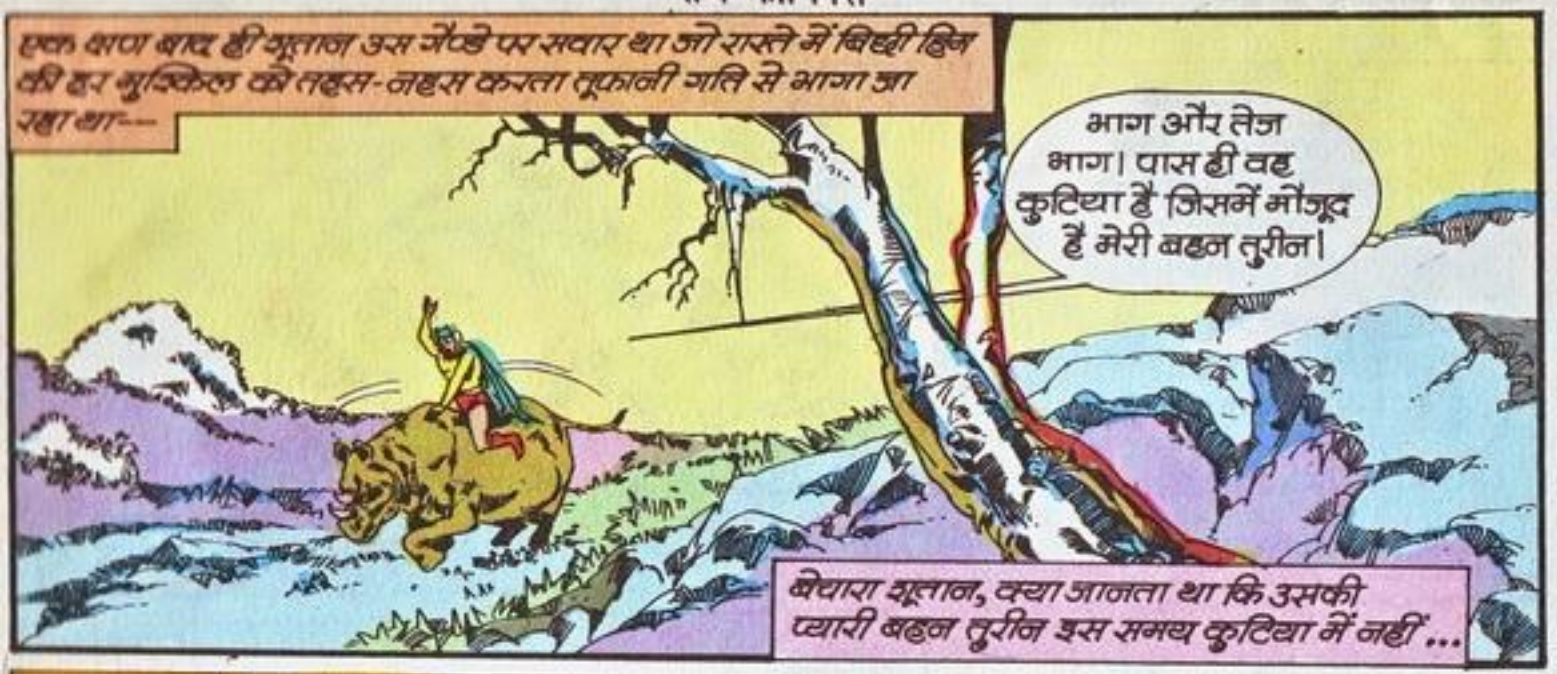
एक क्षण बाद ही शूलान उस सैंडे पर सवार था जो रास्ते में बिछी हिम की हर मुश्किल को तहस-नहस करता तूफानी गति से भागा आ रहा था--
भाग और तेज भाग। पास ही वह कुटिया है जिसमें मौजूद है मेरी बहन तुरीन।
बेचारा शूलान, क्या जानता था कि उसकी प्यारी बहन तुरीन इस समय कुटिया में नहीं ...

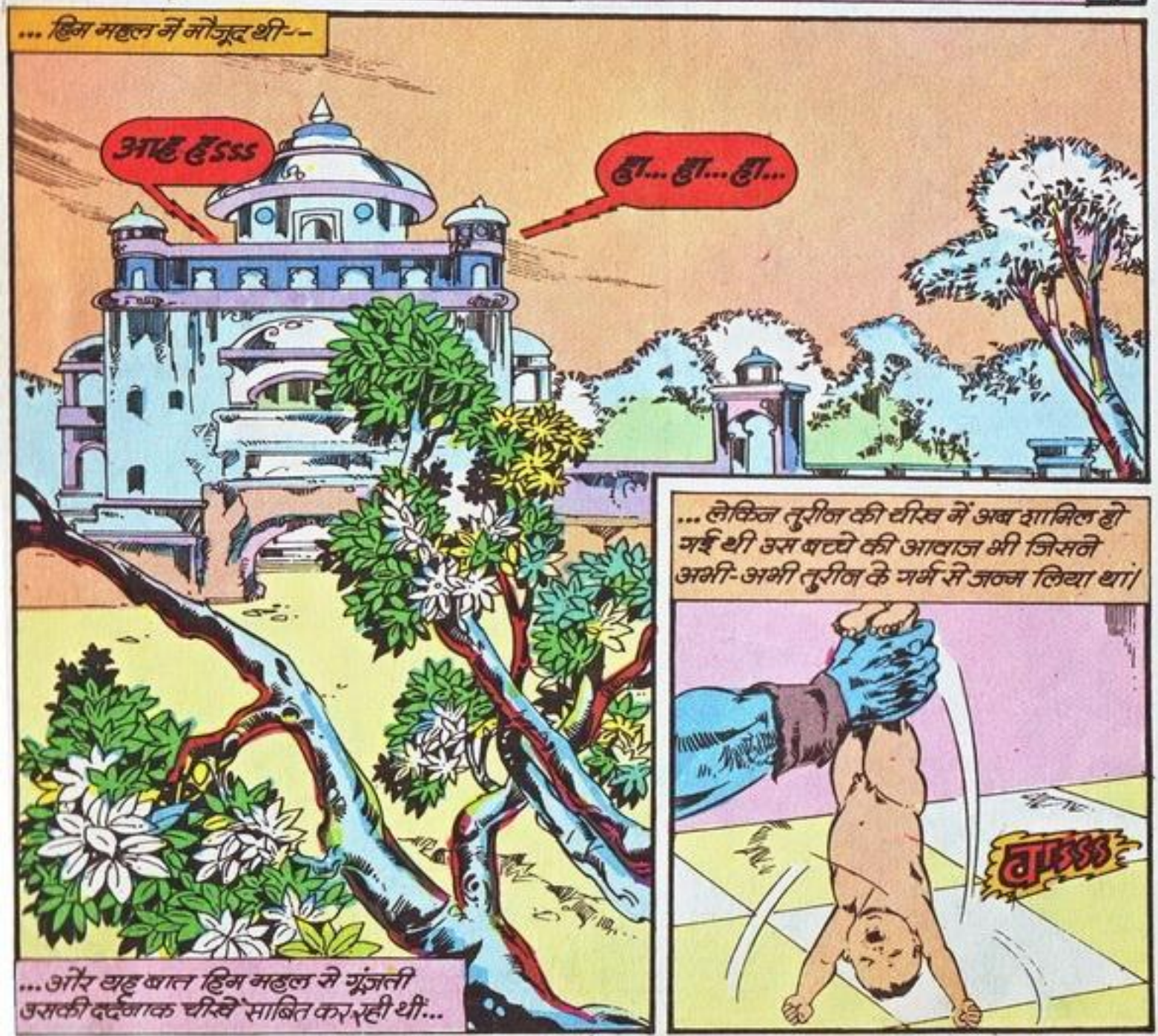
... हिम महल में मौजूद थी--
अहं हंsss
हा... हा... हा...
... लेकिन तुरीन की चीख में अब शामिल हो गई थी उस बच्चे की आवाज भी जिसने अभी-अभी तुरीन के गर्भ से जन्म लिया था।
वाऽऽऽ
...और यह बात हिम महल से गूंजती उसकी दर्दनाक चीखें साबित कर रही थीं...

और जो इस समय हिमराज के हाथों में बंदी था--

हा... हा... हा... तेरे गर्भ से जन्म लेने वाला यह बालक मेरे सबसे बड़े शत्रु भोकाल का बेटा है और शत्रु के इस बेटे को इस संसार में जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं...

... भोकाल के इस पुत्र को मैं अपने हाथों से मारूंगा। हा... हा... हा...।

नहीं!

जल बिन मछली की तरह तड़प उठी एक बेबस मां--

लेकिन उस दुराचारी दैत्यराज पर उस कोमलांगी के करुण स्वरों का कहां प्रभाव पड़ना था--

हा... हा... हा... कहावत है कि विषैले नाग के संपोले को फन उठाने से पहले ही कुचल देना चाहिए।

नहीऽऽ

अट्टहास करते उस दैत्यराज ने नीचे बिछा दिये बर्फ के शूल...

...और उस नवजात शिशु को ऊपर उठा लिया--

हा... हा... हा... काश! तू देख सकता भोकाल की जन्म लेने के साथ ही मृत्यु की गोद में समाने जा रहा है तेरा वंश आगे बढ़ाने वाला कार्तिकेय*!

यही वह समय था मानो जैसे वह अबोध उसकी भाषा समझ गया हो।

पराक्रमी भोकाल के बेटे का रोना बंद हो गया--

अब उसके अधरों पर मनमोहक मुस्कान खेल रही थी-

भविष्य के महाबली की मुस्कान थी ये--

जो इस बात का द्योतक थी कि जो मौत के सामने भी मुस्कराते रहते हैं वे मृत्युंजय कहलाते हैं--

मौत उन्हें अपने आगोश में लेने से कतराती है -

जिनका जन्म इतिहास रचने के लिए हुआ है वे खुद इतिहास नहीं बनते--

*यहां कार्तिकेय से तात्पर्य है वीर बालक। कार्तिकेय भगवान शिव के पुत्र थे-

जहाँ बचाने आ ही पहुंचता है कोई ना कोई वासुदेव* -
कपाला!
* यहां वासुदेव से तात्पर्य है भगवान का दूत। वासुदेव भगवान कृष्ण के पिता थे।
बिना कोई क्षण गंवाये हलक फाड़कर चीखी वह--
बल कपाला!
तुरंत की इस पुकार के साथ ही...
...भयंकर रूप में परिवर्तित होती चली गई कपाला-
पलक झपकते ही अपने स्थान से उछली-
इसी के साथ दूर उछल गई आकी रणबांकुरे से उसकी नोंक-
शाबाश कपाला! भाग जा इस शिशु को लेकर। आज से यही तेरा स्वामी है।

ओह, ये शैतान बिल्ली यहां भी आ पहुंची।...
...लेकिन हिमराज के वारों से बचकर यहां से जीवित नहीं भाग पायेगी यह बिल्ली।
बहुत से घातक हथियार एक साथ उमल दिये हिमराज के हाथों ने

...लेकिन आज जो जिन्दगी उसके मुंह में दबी थी उसके लिए वह अपने शरीर पर खरोंच खाना भी गंवारा नहीं कर सकती थी-
ओह! निकल गई।
नन्हें शिशु को लेकर सनसनाती हुई हिमकंदल से बाहर निकल गई कपाला--

हाथ मलता हिमराज ज्वालामुखी की तरह गरजता तुरीन की तरफ पलटा--
नरभक्षी सिंह के मुंह से उसका शिकार छीनना कितना घातक होता है। यह तुझे आज पता चल जायेगा तुरीन...

...क्योंकि अब तू मेरा शिकार बनने जा रही है।
झपटा उठी तुरीन को झपटकर दबोच लिया हिमराज ने-

जबकि इधर स्वयं को बचाने के लिए छटपटा रही थी वेणु--
सिर पटक-पटक कर हिम तोड़ने की कोशिश में जमे हुए पानी को उसने लहू से लाल कर दिया था--
लेकिन फिर भी तिल भर भी अपने प्रयास में सफल नहीं हो पाई थी वह--
अचानक लहू सी लाली उसकी आंखों में भी चमकने लगी--
हो सकता है पीछे तूरीन, लड़की और शूतान के प्राण खतरे में हों, इसलिए मुझे अति-शीघ्र ही इस हिम की कैद से स्वयं को मुक्त कराना होगा।...
... और ऐसा तब होगा जब मैं धारण करूंगी अपना ★ दिव्यशक्ति रूप--
क ड़ा ऽऽऽऽऽक
बहुत समय बाद आज फिर वेणु ने धरा था अपना वह प्रलयंकारी रूप...

★ वेणु के इस रूप के बारे में जानने के लिए पढ़ें 'शूतान की शादी'

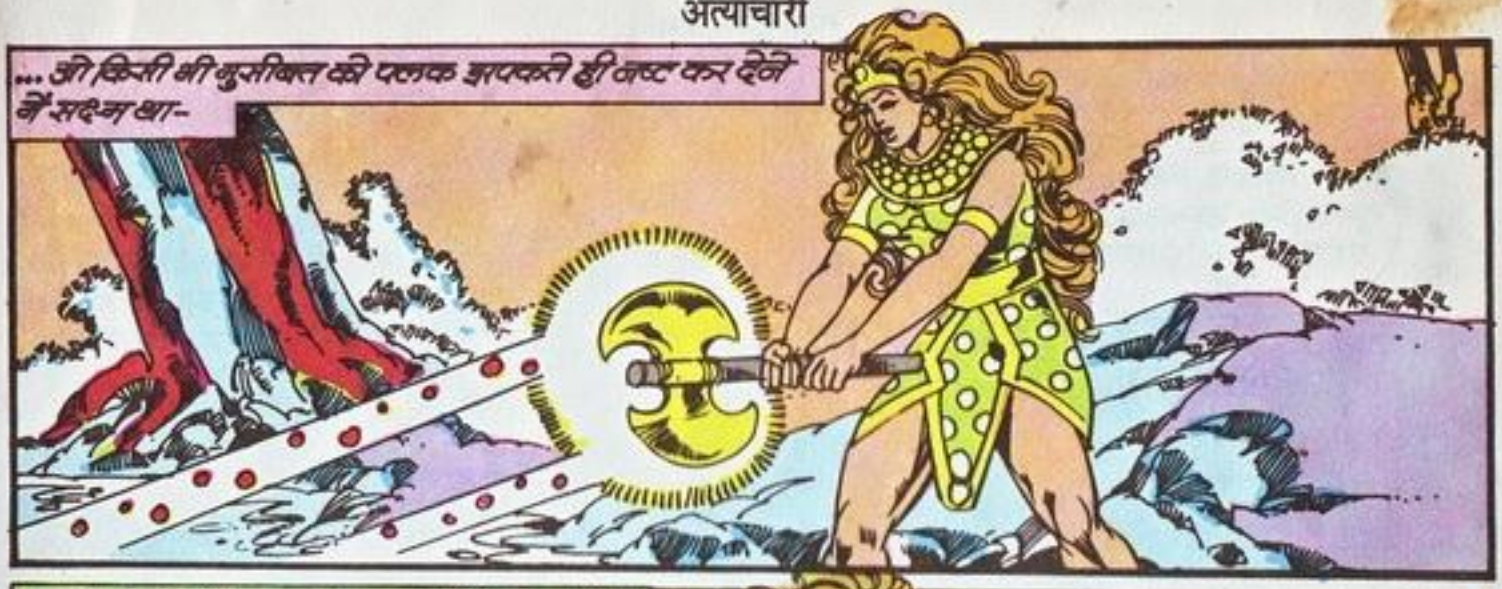
... जो किसी भी मुसीबत की पलक झपकते ही नष्ट कर देने में सक्षम था-

पलभर बाद ही वापस लहरा उठी वेणु पानी से भरा घड़ा अपने साथ ले जाना नहीं भूली थी--

अभी कुछ ही दूर उड़ी थी वेणु की उसे नजर आई--
लड़की!

एक पल बाद ही लड़की उस ठण्डी मौत की कैद से आजाद हो गई--
धन्यवाद बहन! तुमने ठीक समय पर पहुंचकर मेरी सहायता की।
...लेकिन तुम हो कौन?
वेणु! वेणु वृंदावनिया जिसने अपने सुहाग, तुम्हें और तुरीन को बचाने के लिए आज बहुत समय बाद यह दिव्य रूप धारण किया है।
म...मैं पहचान गई तुम्हें। तुम सचमुच वेणु बहन ही हो।
अब यहां खड़े रहकर समय नष्ट मत करो लड़ाकी बहन! चलो चलकर देखें किस हाल में है...

...हमारा सुहाग और तुरीन!
फिर बिना कोई पल गंवाये लड़ाकी को लेकर उड़ चली वेणु...

जल्द ही जब दोनों अपने गंतव्य तक पहुंचीं तो आश्चर्य चकित रह गईं--
अरे! यहीं तो थी वह कुटिया जिसमें हम सब रहते थे।
...कहां गई वह?
कुटिया के साथ-साथ तुरीन और शूलान भी गायब हैं।
अरे! ये आवाज कैसी?
दनाड़-दनाड़
उस आवाज पर दोनों तेजी से पीछे पलटीं...

...तो उन्हें शूलान नजर आया--

ओह! शुक्र है शूलान ठीक है।

वेणु और लक्की की तरह शूलान भी हैरान रह गया था--

प्रसव पीड़ा से तड़पती तुरीन कहां जा सकती है...

... और ये एकाएक कुटिया कैसे गायब हो गई?

एक क्षण! कुटिया कहीं गायब नहीं हुई बल्कि यहीं पानी बनकर बह गई।

मतलब?

यह देखो जहां अपनी कुटियां थी वहां यह ठण्डा जल है। इसका सीधा सा तात्पर्य है कि किसी ने कुटिया को हिम का बनाकर पिघला दिया है।

हम सब जिन मुसीबतों में फंसे थे उनका सम्बंध भी हिम से ही था। कौन है यह सब करने वाला?

हिमराज! निसंदेह ही यह सब हिमराज का किया धरा है। और ऐसा उसने मात्र तुरीन को पाने के लिए किया होगा।

तुरीन को जरूर हिमराज ही ले गया है।

लेकिन कहां?

हिमराज की तुरीन से क्या दुश्मनी है? जानने के लिए पढ़ें 'पराक्रमी,' "शादी नहीं होगी।"

तभी--
अहा!
ये ठण्डी हवा।
हवा का एक झोंका तंबुओं के दरीचों में ठण्डी सिहरन दौड़ाता चला गया--

इसी के साथ विद्युत गति से भाग खड़ा हुआ शूलान--
ठण्डी हवा के इस झोंके ने बता दिया है कि हिमराज इस दिशा में पास ही कहीं मौजूद हैं।
वेणु और लड़की भी शूलान के पीछे दौड़ पड़ी थीं।

जल्द ही उन्हें नजर आया--
हिममहल!
इसी में होंगे हिमराज और तुरीन।

किसी अज्ञात आशंका से कांप उठे शूलान का चेहरा क्रोध से भभकने लगा--
अगर मेरी बहन को कुछ हो गया तो जीवित नहीं छोड़ूंगा मैं हिमराज को।
धड़कते दिल से तीनों ने हिममहल में प्रवेश किया-

पल भर बाद ही उन्हें नजर आई--
तुरीन!

तुरीन की क्षत-विक्षिप्त लाश से लिपटकर तड़प उठे तीनों--
नहीं! तुरीन नहीं! तू हमें छोड़कर नहीं जा सकती।
उठ तुरीन उठ! उठकर कुछ बोल अपने भाई से।
हमारी तुरीन जीवित होती तो जरूर बोलती स्वामी! यह तो उसका शव है और शव कभी नहीं बोलते।

बुरी तरह हैरान तीनों के कानों के पीछे हुई वह आवाज ज्वालामुखी के विस्फोट सी गूंजी

... तीनों तेजी से पीछे घूमें...

क्या था सामने? यह सवाल हम आपके लिए छोड़ते हैं दोस्तो, इस रोमांचकारी और रहस्य से भरी कहानी के सभी जवाबों के लिए आपके लिए लेखक संजय गुप्ता ने लिखा है एक कभी ना भूलने वाला विशेषांक

'आखिरी निशानी'

क्रमशः